• कविताएं...

अगर

अगर नहीं यह सूरज होता
तो होता अंधियारा
अगर न आता चांद, न लगता
आसमान यह प्यारा
अगर नहीं ये तारे होते
चमकीले-चमकीले
आसमान में कहां चमकते
झिलमिल नीले-पीले
और अगर ये रंगबिरंगे
फूल न खिलते होते
तो क्या होता, हम फूलों की
यह सुंदरता खोते
बेलें होतीं नहीं, न होते
पेड़ झूमने वाले
पर्वत होते नहीं कहीं
आकाश चूमने वाले
नदियां, ताल और झरना भी
नहीं एक भी होता
निर्मल पानी का पत्थर से
कहीं न बहता सोता
अगर नहीं होते इतने पशु
पक्षी कहीं न गाते
तो हम कैसे इस दुनिया में
अपना मन बहलाते
इस दुनिया में सब-कुछ ही है
लगती इससे प्यारी
कौन देख पाता वरना ये
सुंदर दुनिया सारी।

■ श्रीप्रसाद

अंतराल

बूंद बूंद से गागर
भरती होगी
लोगों की
अपनी तो सदा
खाली ही नजर आती है...
दरअसल
इतना लम्बा है यहां
बूंदों का अंतराल
कि जब तक
दूसरी आये
पहली दम तोड़ देती है...!

■ सुरेश विमल

• चुटकुला...

पप्पू (परीक्षा हॉल में) : भाई, तीसरे सवाल का जवाब क्या है?
गप्पू : मुझे नहीं पता।
पप्पू : अरे, कुछ तो लिख दे!
गप्पू- मैंने लिखा है-'यह सवाल मेरी समझ से बाहर है।'
पप्पू- अरे वाह! ला, मैं भी यही लिख देता हूं!

• जानकारी...

दुनिया में सबसे ज्यादा तेल

कच्चा तेल ग्लोबल इकॉनमी के लिए ऊर्जा के सबसे जरूरी स्रोत में से एक है। यह ट्रांसपोर्टेशन, इंडस्ट्रीज और रोजमर्रा की अनगिनत गतिविधि को चलाता है। लेकिन जो देश सबसे ज्यादा तेल पैदा करता है जरूरी नहीं कि वह ही सबसे ज्यादा तेल का इस्तेमाल भी करता हो। उदाहरण के लिए अमेरिका दुनिया का सबसे बड़ा कच्चा तेल उत्पादक और सबसे बड़ा तेल उपभोक्ता भी है. लेकिन

सऊदी अरब और रूस जैसे देश अपनी घरेलू खपत से काफी ज्यादा तेल पैदा करते हैं, जिससे वे इंटरनेशनल मार्केट में बड़ी सप्लायर बने हुए हैं।

अमेरिका अभी ग्लोबल कच्चे तेल के उत्पादन में सबसे ऊपर है। यह दुनिया भर के उत्पादन में लगभग 21 से 22% का योगदान देता है। इसका उत्पादन 13.5 मिलियन बैरल प्रतिदिन से ज्यादा है। देश के बड़े पैमाने पर शेल ऑयल इंडस्ट्री, एडवांस्ड एक्सट्रैक्शन टेक्नोलॉजी पर बड़े ऊर्जा इन्फ्रास्ट्रक्चर ने इसे अपनी लीडिंग पोजीशन को बनाए रखने में काफी मदद की है।

सऊदी अरब दूसरे नंबर पर आता है। यह ग्लोबल तेल उत्पादन में लगभग 11% का योगदान देता है। रूस तीसरे नंबर पर है और कनाडा दुनिया के प्रमुख तेल उत्पादक देशों में चौथे नंबर पर आता है। यह देश ग्लोबल तेल सप्लाई और कीमतों को तय करने में बड़ी भूमिका निभाते हैं।

अमेरिका के नाम एक और बड़ा रिकॉर्ड है। यह दुनिया का सबसे बड़ा तेल उपभोक्ता देश है। इसके बड़े ट्रांसपोर्टेशन सेक्टर, इंडस्ट्रियल बेस और ज्यादा ऊर्जा की मांग का मतलब है कि देश में पैदा होने वाले तेल का एक बड़ा हिस्सा देश के अंदर ही इस्तेमाल हो जाता है।

ग्लोबल तेल खपत में चीन दूसरे नंबर पर आता है। इसके तेजी से बढ़ते इंडस्ट्रियल और ट्रांसपोर्टेशन सेक्टर ने कच्चे तेल और पेट्रोलियम उत्पादों की भरी मांग में बड़ा योगदान दिया है। भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा तेल उपभोक्ता है। हालांकि अमेरिका के उलट भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए इंपोर्ट पर काफी ज्यादा निर्भर है। भारत के कच्चे तेल की 80% से ज्यादा जरूरत इंटरनेशनल मार्केट से पूरी होती है। इससे ग्लोबल तेल की कीमत और सप्लाई में रुकावट भारतीय इकोनॉमी के लिए खास तौर पर जरूरी हो जाती है। जापान और रूस दुनिया की सबसे बड़े तेल उपभोक्ता में चौथे और पांचवें नंबर पर आते हैं। तेल उत्पादन और तेल निर्यात दो अलग-अलग चीजें हैं। कोई देश भारी मात्रा में कच्चा तेल पैदा कर सकता है, लेकिन अगर उसकी घरेलू खपत काफी ज्यादा है तो भी वह अपेक्षाकृत कम निर्यात कर सकता है।

रूस एक और बड़ा निर्यातक है। पश्चिमी देशों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों और रोक के बावजूद भी रूसी कच्चा तेल अंतरराष्ट्रीय बाजार, खासकर एशिया में पहुंचता रहता है। चीन और भारत रूसी तेल के जरूरी खरीदार बनकर उभरे हैं। इराक भी कच्चे तेल का एक बड़ा निर्यातक है। इसी के साथ संयुक्त अरब अमीरात और कनाडा भी अंतरराष्ट्रीय तेल निर्यात में बड़ी भूमिका निभा रहे हैं।

• गोनू झा

रात का भाव

गतांक से आगे...

अब समझी, कि मैं सेंबल के बीजों के लिए इतना बेचैन क्यों हूँ? कल ही बाजार जाकर इन बीजों को बेच आऊँगा और इनसे मिलने वाले पैसों से सबसे पहले तुम्हारे लिए महल बनवाऊँगा और तुम्हें जेवर - जवाहरातों से लाद दूंगा । चल, पोटली ले आते हैं।'

पंडिताइन ने कहा 'अब रहने भी दो पंडित जी। रात भर में कौन - सी आफत आ जाएगी। जो बात सेंबल के बीज के बारे में तुमको मालूम है, वही बात अभी लोगों तक पहुँचते पहुँचेगी। अभी सो जाओ।'

गोनू झा को जो सन्देश बाहर खड़े चोर को देना था, वह दे चुके थे इसलिए उन्होंने मन मारने के अन्दाज में कहा - 'ठीक है भाग्यवान! जैसा तुम कहो! वैसे भी अभी सेंबल के बीज की कीमत महाराज के अलावा केवल मैं जानता हूँ।'

और गोनू झा बिस्तर पर लेट गए। पंडिताइन ने भी राहत की साँस ली और सो गई।

दूसरे दिन, सुबह- सुबह पंडिताइन घबराई- सी गोनू झा को झंकोरकर जगाने लगी -'उठिए पंडित जी! गजब हो गया! उठिए!'

गोनू झा उठे। उन्होंने घबराई सी पंडिताइन को देखा तो मुस्कुराकर पूछने लगे-'तो पोटली गायब हो गई?'

पंडिताइन जवाब देने की बजाय सुबकने लगी। वह पछतावे से भरी हुई थी कि यदि उसने गोनू झा की बात मानकर रात को ही बनेरी से पोटली खोल ली होती तो यह हादसा नहीं होता। न जाने कौन रात में पोटली खोलकर ले गया।

गोनू झा को लगा कि चोर वाला राज अब खोल देने में भलाई है! न जाने सेंबल के बीज के सदमें में पंडिताइन पर क्या गुजरे! उन्होंने पंडिताइन की पीठ थपथपाते हुए कहा - 'अब जाने भी दो, दो पाई की चीज के लिए इस तरह आँसू नहीं बहाते।' फिर उन्होंने पंडिताइन को बताया कि रात को उन्होंने चोरों की आहट सुन ली थी और उन्हें गुमराह करने के लिए सेंबल के बीज के भाव बताये थे तथा एक किस्सा गढ़ दिया था।

गोनू झा की बात सुनकर पंडिताइन की जान में जान आई। गोनू झा बिस्तर से उठे । स्नानादि से निवृत होकर उन्होंने स्वच्छ वस्त्र धारण किए और बाजार की ओर चल पड़े। बाजार पहुँचकर उन्होंने सबसे पहला काम यह किया कि बाजार - सुरक्षा चौकी पर गए और वहाँ के चौकीदार से बताया कि बाजार में यदि कोई सेंबल का बीज बेचता नजर आए, तो उसकी गतिविधियों पर नजर रखी जाए, क्योंकि एक ठग कल से ही सेंबल के बीज को जीवन -रक्षक औषधि बताकर बेचने की कोशिश कर रहा है। वह सेंबल के बीज की कीमत दो सौ रुपए तोला बता रहा है। वे खुद उससे ठगाते-ठगाते बचे हैं।

पहले तो चौकीदार को विश्वास ही नहीं हुआ कि कोई व्यक्ति इस तरह का दुस्साहस कर सकता है कि दो पाई की चीज के लिए दो सौ स्वर्ण- मुद्राओं की माँग करे, लेकिन बात चूँकि गोनू झा की थी तो उसे सतर्कता दिखाने की मजबूरी हो गई।

चौकीदार को लेकर गोनू झा बाजार का चक्कर लगाने लगे। एक जगह पर उन्होंने एक व्यक्ति को कपड़ा बिछाए सेंबल का बीज बेचते देखा। आम तौर पर सेंबल के बीज बाजार में नहीं बेचे जाते, इसलिए उन्हें विश्वास हो गया कि यह व्यक्ति कोई और नहीं, वही चोर है जो रात में उनके घर से सेंबल के बीजों की पोटली चुराकर ले आया है। उन्होंने चौकीदार को इशारा कर दिया और उनके इशारे पर चौकीदार चोर के पास पहुँचा और उससे संबल के बीज की कीमत पूछा। चोर ने चौकीदार की ओर देखकर कहा - 'दो सौ स्वर्ण -मुद्राएँ - प्रति तोला।'

चौकीदार ने प्रश्न किया - 'अरे, इतना महँगा? क्या है इन बीजों में? आखिर ये सेंबल के ही बीज हैं न?'

चोर ने मुस्कुराते हुए कहा -'अरे ये साधारण बीज नहीं हैं? इन बीजों में जीवन -रक्षक तत्त्व हैं।'

तब तक गोनू झा वहाँ पहुंच चुके थे और चोर - चौकीदार संवाद का रस ले रहे थे। उन्होंने चोर से कहा - 'अरे तू तो रात का भाव बता रहा है। चौकीदार जी, जरा इसे सेंबल के बीजों का दिन वाला भाव बता दीजिए?'

समाप्त

गोनू झा को जो सन्देश बाहर खड़े चोर को देना था, वह दे चुके थे इसलिए उन्होंने मन मारने के अन्दाज में कहा - 'ठीक है भाग्यवान! जैसा तुम कहो! वैसे भी अभी सेंबल के बीज की कीमत महाराज के अलावा केवल मैं जानता हूँ।'

और गोनू झा बिस्तर पर लेट गए। पंडिताइन ने भी राहत की साँस ली और सो गई। दूसरे दिन, सुबह- सुबह पंडिताइन घबराई- सी गोनू झा को झंकोरकर जगाने लगी - 'उठिए पंडित जी! गजब हो गया! उठिए!'

• रोचक...

ग्लेशियर

ग्लेशियर हमारी पृथ्वी के ऐसे विशालकाय बर्फीले भंडार हैं, जो सालों तक जमा बर्फ के दबाव से बनते हैं और अपने भारी वजन के कारण धीरे-धीरे आगे खिसकते हैं। दुनिया की जलवायु को संतुलित रखने और जीवन को चलाने में इनकी भूमिका सबसे अहम है। पृथ्वी के लगभग 10 प्रतिशत हिस्से यानी करीब 1.5 करोड़ वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में ग्लेशियर फैले हुए हैं। इनमें दुनिया का अधिकांश मीठा पानी सुरक्षित जमा है। ये न केवल बड़ी नदियों के जीवनदाता हैं, बल्कि वैश्विक तापमान को नियंत्रित करने में भी मुख्य ढाल की तरह काम करते हैं। पहाड़ी और अत्यधिक ठंडे इलाकों में जब हर साल पिघलने वाली बर्फ की तुलना में नई बर्फबारी ज्यादा होती है, तो ग्लेशियर का निर्माण शुरू होता है। वक्त के साथ पुरानी बर्फ पर नया दबाव पड़ता है और वह सख्त बर्फीले क्रिस्टल तथा चट्टानी मलबे के साथ एक ठोस रूप ले लेती है।

• रूफटॉप सोलर

रूफटॉप सोलर लगाने के बाद आपका बिजली बिल कितना घटेगा या शून्य होगा, यह तीन प्रमुख बातों पर निर्भर करता है। पहला यह कि आपने अपनी कुल खपत के अनुपात में सही साइज का प्लांट चुना है या नहीं। दूसरा यह कि आपकी बिजली कंपनी का टैरिफ स्लैब क्या है। तीसरा सबसे महत्वपूर्ण कारक आपके राज्य के नेट-मीटरिंग और अतिरिक्त बिजली ग्रिड को बेचने (फीड-इन टैरिफ) के नियम हैं। कम बिजली खपत और अच्छी धूप वाले महीनों में नेट-मीटरिंग के जरिए बिल शून्य हो सकता है, लेकिन यह हर घर के इस्तेमाल के तरीके के हिसाब से अलग-अलग हो सकता है।